कलयुग ऐ कैसी उलटी गंगा भहा रहा है

कलयुग ऐ कैसी उलटी
गंगा भहा रहा है,
माता पिता को
श्रवण ठोकर लगा रहा है,

कलयुग ऐ कैसी उलटी.....
त्रेता में एक ही रावण
जिसने चुराई एक सीता,
घर घर में आज रावन

सीता चुरा रहा है,
कलयुग ऐ कैसी उलटी .....
सुनलो मेरी बहनों
रहना ज़रा संबल के,

हाथो में पापी
राखी बना रहा है,
कलयुग ऐ कैसी उलटी.....
घर में लगा है पर्दा

बाज़ार में पर्दा,
ये पतनी कमाने जाए और
पति रोटी बना रहा है,
कलयुग ऐ कैसी उलटी .....

बच्चे गरीब के तो
रोटी को है तरस ते,
हमारे सेठ जी का

कुत्ता बर्फी उड़ा रहा है,
कलयुग ऐ कैसी उलटी.....

Source: https://www.bharattemples.com/kalyug-ae-kaisi-ulati-ganga-bha-raha-hai/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw